> यह न मानें कि जीत ही सबकुछ है, ज्यादा महत्वपूर्ण यह है कि आप किसी आदर्श के लिए संघर्षरत रहें। यदि आप किसी आदर्श पर डट नहीं सकते तो आप जीतेंगे क्या? -विलियम जेम्स अमेरिकी दार्शनिक

। अच्छी सोच

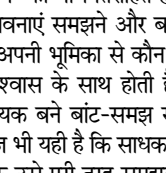

डॉ. आलोक टंडन, रिसर्च फैलो, इंडियन काउंसिल ऑफ फिलोसॉफिकल रिसर्च प्रोजेक्ट

मानव को सहानुभूति नहीं, समानुभूति की आवश्यकता

सहानुभूति में हम दूसरे के दुख को पहचानकर उसे दूर करने के बारे में सोचते हैं, लेकिन खुद दुखी नहीं होते। इसमें दया करने से अपनी श्रेष्ठता का अहंकार पनपता है। समानुभूति यानी दूसरा जैसा महसूस कर रहा है, वैसा महूसस करना। इसमें संवेदना का व्यवहार नहीं, व्यवहार में संवेदना झलकती है। दोनों में संवेदना की गहराई का फर्क है।

अतिशय व्यक्तिवादिता से पीड़ित जिस हिंसक समाज में हम आज जी रहे हैं, वह आक्रामक स्पर्द्धा को बढ़ावा देकर व्यक्ति को व्यक्ति के खिलाफ टकराव की स्थिति में खड़ा कर देता है। हम ऐसे संवेदनहीन समूह में बदलते जा रहे हैं जहां हर 'दूसरा' हमारा प्रतिद्वंद्वी है, उसका सुख-दुःख हमें नहीं व्यापता। मानवीय संबंधों में बिखराव के पीछे तो यह है ही, राष्ट्रों के बीच टकराव के पीछे भी कुछ हद तक यह जिम्मेदार है।

समानुभूति का मतलब है, 'दूसरा जैसा महसूस कर रहा है, वैसा ही महसूस करना'। इसके लिए स्वयं को दूसरे के स्थान पर रखकर सोचना होता है। सहानुभूति में हम दूसरे के दुख को पहचानकर उसकी मदद करने की सोचते हैं। हमारा स्वयं दुखी होना जरूरी नहीं है। सहानुभूति में एक दूरी है, जबकि समानुभूति में स्वयं वही भाव महसूस करने के कारण बराबरी है। सहानुभूति में अक्सर दया करने से अपनी श्रेष्ठता का अहंकार पनपता है। सहानुभूति से आप किसी गरीब की मदद कर सकते हैं किंतु जिसने अकेला बेटा खो दिया हो उसके सामने अपने बेटे की उपलब्धियों और वैभव की चर्चा न करना समानुभूति का उदाहरण है। इसके लिए हृदय की विशालता चाहिए, मुंह का बड़बोलापन नहीं। इसमें 'अन्य' का बोध तिरोहित हो जाता है और करुणा का जन्म होता है।

दूसरे की भावनाएं समझने और बांटने का मानवीय संबंधों को मधुर और स्थायी बनाए रखने में अपनी भूमिका से कौन इनकार कर सकता है। मित्रता की शुरुआत भी अक्सर इसी विश्वास के साथ होती है कि अगला व्यक्ति हमारी भावनाओं-विचारों को, बिना निर्णायक बने बांट-समझ सकेगा। आध्यात्मिक गुरु या मनोविश्लेषक की सफलता का राज भी यही है कि साधक-बीमार को यह पूरा विश्वास हो जाता है कि गुरु या मनोविश्लेषक उसे पूरी तरह समझता है और उसके सामने दिल खोला जा सकता है। सामाजिक जीवन में भी जहां टकराव है, वहां भी बातचीत की सफलता की संभावना तभी ज्यादा होती है जब दोनों पक्ष एक दूसरे के दृष्टिकोण को ठीक से समझत हों और उसके प्रति संवेदनशील हों। महात्मा गांधी और मार्टिन लूथर किंग का सत्याग्रह इसका अच्छा उदाहरण है। दलाई लामा इसके आधुनिक प्रवक्ता हैं।

समानुभूति के अभाव में लोग गलत फैसले लेते हैं जो उनको और आसपास के लोगों को हानि पहुंचाते हैं। अच्छी बात यह है कि समानुभूति को हम सीख भी सकते हैं और जीवन को अधिक प्रसन्न और कम जटिल बना सकते हैं। ध्यान से सुनने की आदत, दूसरे के भले की वास्तविक चिंता, लेकिन निर्णायक बनने से बचना और उनकी भावनाओं को औचित्य प्रदान करना आदि ऐसे तरीके हैं, जिनसे हम समानुभूति विकसित कर सकते हैं। सच्ची मुस्कुराहट के साथ पूछा गया एक वाक्य, 'कहो, कैसा चल रहा है,' इसकी अच्छी शुरुआत हो सकती है। समानुभूति, सहनशीलता और सहानुभूति से आगे का उपक्रम है जहां संवेदना का व्यवहार नहीं, व्यवहार में संवेदना झलकती है। तभी तो कोई बुद्ध और गांधी बनता है। संसार को करुणा, अहिंसा और प्रेम का प्रेरक संदेश दे पाता है। आइए, हम सब नरसी मेहता की तरह इसे अपने में जगाएं, वैष्णव जन तो तेणने कहिए जे पीड़ परायी जाणे रे ....''

वास्तुशिल्प बदल सकते हैं दुनिया की नियति

। प्रेरणा... पर्यावरण व प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा पर फ्यूचर काउंसिल में भारतीय आर्किटेक्चर को महत्व

शीला श्री प्रकाश
आर्किटेक्ट, दुनिया के टॉप 50 वास्तुविदों में शुमार, चेन्नई
studio@shilpaarchitects.com

आर्किटेक्चर यानी वास्तुशिल्प महिलाओं का क्षेत्र नहीं माना जाता था। तीस-पैंतीस साल पहले यानी 1979 में तो सामाजिक मर्यादाएं तो थीं ही, इतने अवसर भी नहीं थे। डिज़ाइन, इंजीनियरिंग और कंस्ट्रक्शन को लेकर रियल एस्टेट इंडस्ट्री पुरुषों पर ही भरोसा करती थी। मेरा मानना है कि सारे क्षेत्रों में महिलाओं को सामाजिक स्वीकार्यता उनकी प्रासंगिकता और समस्या सुलझाने व टीम निर्माण के प्रति संवेदनशीलता के कारण मिली। वह कैसा समय था,यह इसी से समझा जा सकता है कि स्टेट टॉपर होने के बाद भी आर्किटेक्चर स्कूल के डीन ने इंटरव्यू में पूछा कि क्या आप किसी पुरुष को चुने जाने के अवसर से वंचित नहीं कर रही हैं? लैंगिक भेदभाव का इतने खुले रूप में मैंने कभी सामना नहीं किया था।

बचपन से कला और शिल्प मुझे लुभाते थे। मैं अपने घर और गार्डन को नया स्वरूप देने के स्केच बनाया करती थी। द्वितीय विश्वयुद्ध के सैन्य अफसर मेरे पिता मुझे इसमें प्रोत्साहित करते। तब मुश्किल से किशोर अवस्था में पहुंची थी और अपने आइडियाज को अमल में आते देख अत्यधिक प्रसन्नता होती। मैं समझ गई कि मुझे वास्तुशिल्प में ही कॅरिअर बनाना है।

अब देखिए कि प्रेरणा कहीं से भी मिल जाती है। मैं दो-तीन साल की थी, जब 1958 में आई अभिनेत्री वैजयंतीमाला की क्लासिक फिल्म 'मधुमति' के डांस सिक्वेंस का मुझ पर गहरा प्रभाव पड़ा। मेरी मां भी कर्नाटक संगीत की प्रतिभाशाली गायिका थीं, लेकिन रूढ़िवादिता के कारण उन्हें कभी सार्वजनिक प्रस्तुति का मौका नहीं मिला। शायद इसीलिए साढ़े चार साल की उम्र में उन्होंने मुझे मुंबई के राजराजेश्वरी नाट्य कला मंदिर में भर्ती करा दिया। कल्याणसुंदरम पिल्लै मेरे पहले गुरु थे और मैं उनकी पहली शिष्या! मात्र 6 साल की उम्र में मुंबई के षणमुखानंद हॉल में प्रस्तुति देकर मैंने समीक्षकों की सराहना प्राप्त की। पढ़ाई और परीक्षाओं के बीच कला की साधना चलती रही। फिर पिताजी का तबादला चेन्नई हो गया और परिवार चेन्नई आ गया। अब धंडेयुधपाणी पिल्लै मेरे गुरु बने। बढ़ती उम्र के साथ मुझे पद्मभूषण कमला लक्ष्मण और पद्मश्री पद्म सुब्रह्मण्यम जैसे अद्भुत कलाकारों के साथ प्रस्तुति देने का अवसर मिला। जब पद्मविभूषण डॉ. वेम्पट्टीचिन्ना सत्यम से कुचीपुड़ी नृत्य सीखा तो अभिनेत्री हेमा मालिनी के साथ संगीत नाट्य का मौका मिला। इसी प्रस्तुति ने वीणा के स्वरों ने मुझे मोह लिया और मैं पद्मभूषण चित्तीबाबू के पास वीणा सीखने पहुंच गई। वे अद्भुत कलाकार थे। मां साथ में जाकर वीणा क्लास के नोट लेतीं ताकि मैं अपनी व्यस्त दिनचर्या में जब भी वक्त मिले अभ्यास कर सकूं। मेरे सहित अन्य शिष्यों के साथ चित्तीबाबू ने 'वेडिंग बेल्स' रिकॉर्ड किया, जो क्लासिक माना जाता है। शुरुआती जीवन में ही इतनी अतिव्यस्तता के बारे में मेरा मानना है कि खुद को विविध क्षेत्रों में लगाने की क्षमता विकसित करना बहुत जरूरी है। आप सोचेंगे कि वास्तुशिल्प की चर्चा में नृत्य-संगीत कहां से आ गए। दरअसल, मैं बताना चाहती हूं कि ललित कलाओं से ही अमूर्त विचारों को मूर्त रूप देने की कला आती है। कोई विचार है, कथा है, उसे नृत्य की भाव मुद्राओं से व्यक्ति करना वैसी ही है जैसा किसी वास्तुशिल्प के विचार को जमीन पर साकार करना। 1979 में बेटे के जन्म के बाद मैंने अपना डिजाइन स्टूडियो 'शिल्पा' स्थापित किया। ग्राहक की जरूरत और रचनात्मकता में संतुलन स्थापित करने में ललित कलाओं का प्रशिक्षण काम आया। तब से 36 वर्ष की इस यात्रा में विविध प्रकृति और पैमाने के कई प्रोजेक्ट साकार किए- व्यक्तिगत आवासों व टाउनशिप से लेकर फैक्ट्री व ऑफिस बिल्डिंग्स, होटल, शिक्षा संस्थान और म्यूजियम व थिएटर तक।

आर्किटेक्चर की यात्रा में तब एक मुकाम हासिल हुआ जब वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम ने संवेदनशील आर्किटेक्ट के रूप में मेरी पहचान करते हुए ग्लोबल एजेंडा काउंसिल ऑन डिज़ाइन इनोवेशन फॉर 2010-12 के लिए आमंत्रित किया। आबू धाबी में हुए सम्मेलन में फोरम ने सर्वांगीण टिकाऊपन के आधार पर शहरों की डिजाइन को रेट करने के रेसिप्रोकल डिजाइन इंडेक्स की बहुत सराहना की। वहीं मुझे काम का नेतृत्व करने का मौका मिला। यह पहली बार था कि शहरों का दर्जा उनके डिज़ाइन के आधार पर तय हो रहा था। उम्मीद है कि भारत में दुनिया की बढ़ती रुचि और मेरे भारत केंद्रित समाधानों की लोकप्रियता बढ़ेगी और आर्किटेक्चर में पिछले सदी का पश्चिमी प्रभुत्व खत्म होकर भारतीय प्रभाव बढ़ेगा। हमारे चारों ओर समृद्ध विरासत, कला और लोक-कला के रूप में सौंदर्य बिखरा पड़ा है। मेरी कोशिश इनके और आधुनिक टेक्नोलॉजी व निर्माण सामग्री में संतुलन स्थापित करने की रहती है। इस साल 2016-18 के लिए पर्यावरण के भविष्य और प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा को लेकर हो रही ग्लोबल फ्यूचर काउंसिल में मुझे 25 सदस्यीय अंतरराष्ट्रीय टीम के सदस्य विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित किया गया है। इस टीम को दुनिया की दशा सुधारने के लिए नई दृष्टि विकसित करने और सहयोगात्मक समाधान सुझाने को कहा गया है। होलिस्टिक सस्टेनेबिलिटी की मेरी अवधारणा की जड़ें भारतीय परम्परा और संस्कृति में है, जिसे अंतरराष्ट्रीय मंचों पर मान्यता मिली है। इस अवधारणा का मतलब है उस इमारत में संतुलन साधना जो विभिन्न दिशाओं व तीव्रताओं वाली प्राकृतिक शक्तियों का लगातार सामना करती रहती है।

देश में स्मार्ट सिटी प्रोग्राम चलाया जा रहा है। किसी भी शहर का प्राथमिक उद्देश्य बिल्कुल भिन्न व अनूठा होता है। मैं आर्किटेक्चर को बहुत जिम्मेदारीभरा पेशा मानती हूं, क्योंकि इसका लाइफटाइम प्रभाव रहता है और लोगों पर सीधा असर डालता है, जो उस शहर की रहने लायक विशिष्टता बढ़ाता है। मसलन, किसी शहर का मूल लक्ष्य कनेक्टिविटी है तो उसके साथ मूलभूत ढांचा, सुरक्षा और सांस्कृतिक अनूठापन अपनेआप जुड़ जाते हैं। सर्वांगीण कनेक्टिविटी हासिल करने के लिए उनमें संतुलन स्थापित करना जरूरी है। युवा आर्किटेक्ट और डिज़ाइनर्स को यह अहसास होना चाहिए कि हम सौभाग्यशाली हैं कि कला, परम्परा और संस्कृति की हमारी समृद्ध विरासत है। वास्तुशिल्प में इनसे प्रेरणा लेनी चाहिए। हम अलग-अलग जगहों को अलग-अलग प्रतिक्रिया देते हैं और आर्किटेक्चर से जो वातावरण निर्मित होता है उसके अनुसार व्यवहार का तालमेल बिठाते हैं। उस अर्थ में आर्किटेक्ट पर बहुत जिम्मेदारी होती है, क्योंकि वे वाकई डिजाइन के माध्यम से दुनिया की नियति बदल सकते हैं।

उत्तरप्रदेश में अन्य दलों ने सत्ता की थाली भाजपा को सौंपी

अंडर-30
करंट अफेयर्स पर 30 से कम उम्र के युवाओं की सोच

अमित कुमार सिंह, 27
रिसर्च स्कॉलर, एमसीयू, भोपाल
twitter.com/Amit9boltu

इतिहास गवाह है कि आपसी कलह और 'अहं ब्रह्मास्मि' की अनुभूति कई राजनीतिक पार्टियों को गर्त में ले गई है, लेकिन यूपी का लोकविमर्श इस बार कुछ अलग ही इशारा कर रहा है। 2012 के यूपी विधानसभा चुनाव में टीम अखिलेश ने जो कमाल दिखाया था, वह इस बार फीका पड़ रहा है। समाजवादी पार्टी की लाख बुराइयों के बावजूद अखिलेश के काम से जनता खुश थी। नए नेतृत्व ने बहुत कुछ नहीं, तो भी कुछ न कुछ सकारात्मक बदलाव जरूर किए हैं। लेकिन, अब साइकिल को पंचर करने का श्रेय उन्हीं को दिया जाएगा, जिनकी देख-रेख में साइकिल बनी और खूब चली। साइकिल दो पहियों (मुलायम और शिवपाल) की सवारी जरूर है, लेकिन इसे चलाने के लिए गद्दी पर एक ही व्यक्ति (अखिलेश) की जरूरत होती है। इसी गद्दी की रंजिश से साइकिल डगामगा गई। उधर राहुल गांधी के लिए प्रशांत किशोर के एडवाइजरी बोर्ड ने भी कुछ नया कारनामा नहीं किया। खाट सभा ने कइयों की खटिया जरूर खड़ी की। खाट ने लोगों के दरवाजों पर जैसे ही दस्तक दी, अगल-बगल के लोग मिली-जुली प्रतिक्रिया के साथ उस खाट पर बैठे और चर्चा की। इस चर्चा ने कांग्रेस को विमर्श में शामिल जरूर किया पर जनता होशियार बहुत है। कांग्रेस के तीर का असर हो पाता, इससे पहले ही भाजपा ने उसके किले में सेंध लगा दी। रीता बहुगुणा जोशी के भाजपा में शामिल होते ही नए राजनीतिक समीकरण सामने आने लगे हैं। यूपी में लूला हो चुका कांग्रेस का हाथ चाहकर भी किसी कीमती चीज को नहीं पकड़ सकता, उधर हाथी को जिस साफगोई और डीलडौल के लिए पसंद किया जा रहा था, उसने 'अहं ब्रह्मास्मि' का एटीट्यूड अपनाने की कोशिश में अपना राजनीतिक कद छोटा कर लिया। यूपी की जनता हाथी को अपना पाती, इससे पहले ही उसके कई बड़े सहयोगी कमल के साथ हो लिए, क्योंकि राष्ट्रभक्ति की ठेकेदारी सिर्फ कमल के पास है। इस दौड़ में जिस तरह बड़े खिलाड़ी टीम भाजपा में शामिल हुए है, उसे देखकर अंदाजा लगाना मुश्किल नहीं है कि भाजपा को अन्य सभी पार्टियों ने थाली सजा कर दे दी है। भाजपा इसे भुना पाएगी या नहीं, यह 2017 का चुनाव साफ कर देगा।

। पॉजी-टून

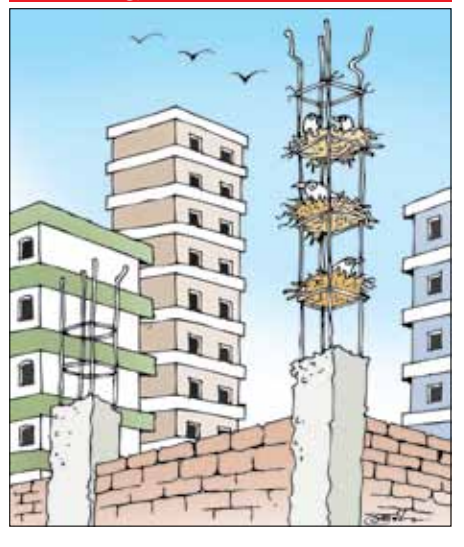

नतीजों पर संदेह हुआ तो चुनाव को चुनौती देंगे ट्रम्प!

आने वाले 20 दिन से भी कम समय में यह पता चल जाएगा कि अमेरिका का नया राष्ट्रपति कौन होगा। मुकाबला डोनाल्ड ट्रम्प और हिलेरी क्लिंटन के बीच है। राजनीतिक पंडितों ने क्लिंटन के जीतने की प्रबल संभावनाएं बताई हैं। उधर, ट्रम्प ने कहा कि अगर उन्हें जरा भी कुछ संदेहास्पद लगा तो इस चुनाव को चुनौती देने के लिए उनके पास कानूनी अधिकार सुरक्षित हैं। इससे खुद उनकी पार्टी आशंकित है कि ट्रम्प सत्ता के हस्तांतरण की अमेरिकी परंपरा को नुकसान न पहुंचा दें।

• एलन रेपपोर्ट और एलेक्जेंडर बर्न्स

> **मैं स्पष्ट नतीजे स्वीकार करूंगा, लेकिन संदेह हुआ तो उन्हें कानूनन चुनौती देने का अधिकार मेरे पास सुरक्षित है। मैं नियमों और परंपराओं का पूरी तरह पालन करूंगा। जहां तक जीतने की बात है तो हम हर स्तर पर जीतेंगे - डोनाल्ड ट्रम्प**

© The New York Times
दैनिक भास्कर से विशेष अनुबंध के तहत

अमेरिकी राष्ट्रपति पद के लिए रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रम्प ने मतदान के पहले ही चुनाव नतीजों को लेकर बहस शुरू करा दी है। उन्होंने हाल ही में कहा कि अगर चुनाव नतीजे उनके पक्ष में नहीं आए तो, वे उन्हें स्वीकारने के लिए बाध्य नहीं होंगे। ट्रम्प के इस बयान के बाद दोनों प्रमुख दलों में चिंता का वातावरण है। उन्हें आशंका है कि चुनाव नतीजों के बाद शांतिपूर्ण तरीके से सत्ता हस्तांतरण की अमेरिकी परंपरा ट्रम्प के कारण टूट न जाए। पार्टी में बात जब विवाद तक पहुंच गई, तब ट्रम्प ने अपनी बात सुधारते हुए कहा कि अगर नतीजे एकतरफा रहे, तो वे उस पर विवाद नहीं करेंगे।

8 नवंबर को पूरे अमेरिका में मतदान होना है और इसके पहले नतीजों के लेकर ट्रम्प के बयान ने उनके प्रति पार्टी नेताओं को भी अस्पष्ट स्थिति में ला दिया है। हालांकि उन्होंने अब तक यह नहीं कहा है कि वे जनता का फैसला सहर्ष स्वीकार करेंगे। दोनों शीर्ष उम्मीदवारों ने तीसरी और आखरी बहस के मद्देनजर मतदान वाले दिन के लिए लोगों को लुभाने की तैयारियां शुरू कर दी हैं। द न्यूयॉर्क टाइम्स के पोल बताते हैं कि डेमोक्रेटिक उम्मीदवार हिलेरी क्लिंटन की एकतरफा जीतने की संभावनाएं तेजी से बढ़ रही हैं। पिछले सप्ताह की 89 फीसदी की बजाय अब 93 फीसदी संभावना हिलेरी के पक्ष में है।

डेलावेर (ओहायो) में समर्थकों के साथ एक सभा को संबोधित करते हुए ट्रम्प ने कहा कि कैसे उनके खिलाफ षड्यंत्र रचा जा रहा है। उन्होंने स्पष्ट किया कि अगर नतीजे एकतरफा आए, तो वे उन्हें चुनौती नहीं देंगे। ट्रम्प ने कहा- अगर मैं जीता तो निश्चित ही नतीजे स्वीकार करूंगा। यह राष्ट्रपति चुनाव मेरे लिए ऐतिहासिक साबित हुआ है। ट्रम्प ने यह भी कहा कि अगर जॉर्ज डब्ल्यू बुश नतीजों को चुनौती नहीं देने की बात कहते, तो वर्ष 2000 का राष्ट्रपति चुनाव अल गोर के सामने हार जाते। उन्होंने उस विकल्प को अपनी टेबल से बाहर नहीं किया था। हालांकि पार्टी की चिंताओं को कम करते हुए ट्रम्प ने कहा कि वे देश को चुनाव बाद की गतिविधियों में व्यस्त रखने की योजना बना रहे हैं। एक पत्रकार के सवाल पर ट्रम्प ने कहा- ऑफ कोर्स, मैं स्पष्ट नतीजों को स्वीकार करूंगा, लेकिन नतीजों पर संदेह हुआ तो उन्हें कानूनन चुनौती देने का अधिकार भी मैं सुरक्षित रखना चाहूंगा। क्या आप हार को सहर्ष स्वीकार करेंगे? इस पर ट्रम्प ने कहा कि मेरे सामने जो भी उम्मीदवार आएंगे, मैं नियमों और परंपराओं का पूरी तरह व हमेशा पालन करूंगा। जहां तक जीतने की बात है, तो हम निचले स्तर से ऊपर तक जीतेंगे।

पोल बताते हैं कि ट्रम्प और क्लिंटन के बीच कई राज्यों में जबर्दस्त टसल होने वाली है। उन राज्यों में उनके वोटों के प्रतिशत में बहुत ज्यादा अंतर नहीं होगा। हालांकि रिपब्लिकन से आगे डेमोक्रेटिक के उम्मीदवार होंगे। इस बात की संभावना है कि ट्रम्प बड़े अंतर से यह चुनाव हार सकते हैं। राज्यों में जब से रिपब्लिकन उम्मीदवारों को लेकर जो प्रारंभिक परिणाम आए हैं, उनसे पार्टी में गहरी चुभन महसूस की गई है

न्यूयॉर्क में चैरिटी डिनर में जब डोनाल्ड ट्रम्प पहुंचे तो उनकी परछाई भी दिख रही थी। यह दृश्य वहां चर्चित रहा।

इसलिए ट्रम्प की चेतावनी को कोई नजरअंदाज नहीं कर रहा है कि वे नतीजों के लेकर कानूनी विवाद खड़ा सकते हैं।

डेमोक्रेटिक पार्टी ने चुनाव को चुनौती वाले ट्रम्प के बयान पर कहा- इससे फिर साबित होता है कि वे राष्ट्रपति बनने लायक नहीं हैं।

▪ हिलेरी क्लिंटन की प्रवक्ता क्रिस्टीना रेनॉल्ड्स कहती हैं- हम उन्हें (डोनाल्ड ट्रम्प) सिर्फ हरा ही नहीं रहे, बल्कि निश्चित रूप से पराजय दिखाने वाले हैं। इस तरह हम सुनिश्चित करते हैं कि हिलेरी क्लिंटन एकतरफा जीत रही हैं।

▪ हिलेरी क्लिंटन की पार्टी से चुनाव लड़ रहे सीनेटर टिम काइने कहते हैं- ट्रम्प अब कराहने लगे हैं, अगर वे हार जाते हैं, नतीजे एकतरफा होते हैं, तो मुझे नहीं लगता कि लोग फिर भी उनके साथ खड़े रहेंगे। मुझे नागरिकों पर पूरा भरोसा है कि वे डेमोक्रेटिक पार्टी के उम्मीदवारों के जीताएंगे। परिणाम इतने स्पष्ट होंगे कि डोनाल्ड ट्रम्प उन्हें चुनौती नहीं दे पाएंगे।

© The New York Times

दुश्मनों का भला कर रहे हैं ट्रम्प

मयामी में राष्ट्रपति बराक ओबामा ने ट्रम्प के उन बयानों का उल्लेख किया था, जिसमें उन्होंने चुनाव व्यवस्था पर संदेह जताया था। ट्रम्प ने कहा था कि अमेरिका जैसे देश में चुनाव में कोई भी हेर-फेर कर सकता है। इस पर ओबामा ने कहा- चुनाव व्यवस्था पर संदेह करके ट्रम्प ने अमेरिका को कमजोर करने वाला काम किया है। अगर उन्हें चुनाव को लेकर अपने ही नागरिकों की विचारधारा पर संदेह होता है, तो इसका मतलब की वे हमारी लोकतांत्रिक क्षमताओं को कम आंक रहे हैं। ऐसा करके वे हमारे दुश्मनों के लिए भला काम कर रहे हैं।

सामने ट्रम्प हैं इसलिए चुनाव जीतने की स्थिति में हैं हिलेरी

• पॉल क्रुगमैन, राजनीतिक विशेषज्ञ एवं अर्थशास्त्री

हिलेरी क्लिंटन जबर्दस्त उम्मीदवार हैं। उनमें साहस दिखाई देता है। आप देखिए कि राजनीतिक पंडित शुरुआत से यही कह रहे हैं। यह चुनाव वर्ष 2000 के दौर की याद दिला रहा है, जब मीडिया में नेताओं का मजाक बनाया जाता था। यहां ईमानदारी का संबंध नेताओं के व्यक्तित्व पर निर्भर करता है।

अजीब लेकिन सच है कि हिलेरी क्लिंटन ने डेमोक्रेटिक पार्टी की ओर से नामांकन बहुत आसानी से हासिल कर लिया। फिर उनकी अपने प्रतिद्वंद्वी के साथ तीन अच्छी बहसें भी हो चुकी हैं और इसके चलते वे जबर्दस्त पसंदीदा नेता बनकर उभरी हैं। माना जाने लगा है कि वे नवंबर के मतदान में बहुत ज्यादा अंतर से जीत जाएंगी। लेकिन यह सब कैसे संभव होगा? यहां एक बात संदेह पैदा कर रही है, वह यह कि वे बहुत सौभाग्यशाली हैं। अगर रिपब्लिकन पार्टी में डोनाल्ड ट्रम्प की बजाय और कोई उम्मीदवार होता, तो कहानी कुछ और होती। संभव था कि वे बहुत बड़े अंतर से पराजित होने की स्थिति में होतीं। हो सकता है कि हिलेरी क्लिंटन जीत रही हों, क्योंकि उनकी राजनीतिक मजबूती अधिक है। यहां देखना जरूरी है कि क्या रिपब्लिकन पार्टी मजबूत उम्मीदवार उतार पाई? डोनाल्ड ट्रम्प इसलिए नामांकन हासिल कर पाए, क्योंकि उन्होंने पार्टी को वह आधार दिया, जो वह चाहती थी। अमेरिका में नस्लीय बातों का बढ़ा-चढ़ाकर पेश करना कई दशकों से रिपब्लिकन नेताओं की सफलता का कारण रहा है। इन बातों को चिल्ला-चिल्लाकर पेश किया गया, इस मौके पर जब विपक्षी ने इन्हें रोकनी की कोशिश की, तो रिपब्लिकन ने यह दिखाया कि देखिए ये कितने अप्रभावी हैं।

रिपब्लिकन में नेताओं की उम्मीदवारी को लेकर अलग से रणनीति अपनाई जाती, तो कहानी कुछ और होती। आपको ध्यान होगा कि कभी मार्को रूबियो का नाम भी उम्मीदवारी के लिए आगे था। कुछ लोग मानते हैं कि उनके दिमाग में कुछ गड़बड़ है। इसे स्पष्ट करने के लिए बता दूं कि उन्होंने एक बहस में सबसे खराब प्रदर्शन किया था। उन्हें पता नहीं था कि उनके शब्दों का क्या असर होगा। उन्होंने राष्ट्रपति बराक ओबामा पर जान-बूझकर अमेरिका को कमजोर करने का आरोप लगाया था। तब रूबियो को भी पता नहीं था कि वे क्या बोल रहे हैं। निश्चित ही वे जो बोल रहे थे, वह उनके अंदर की कमजोरियां थीं। यही वह सच है कि रिपब्लिकन पार्टी में ही कुछ ठीक नहीं है। कितने लोग यह मानते हैं कि टैक्स में कटौती की बातों से, जलवायु परिवर्तन की योजनाओं से या आईएस से निपटने के उपायों पर बात करने से चमत्कारिक असर होता है। इन बातों का मतदाताओं पर कितना असर होता है, यह चुनाव परिणामों में पता चल जाता है। क्लिंटन के बारे में मैं जितना जानता हूं वह यह कि उन्हें बात करने के तौर-तरीके बहुत अच्छे से आते हैं। महिला अधिकारों, नस्लीय मुद्दे हो या परिवार व्यवस्था का समर्थन करने की बात, वे बहुत निष्ठा और संयम के साथ इन विषयों पर पेश आती हैं। उनके व्यक्तित्व के ये वे तथ्य हैं, जो अन्य पार्टी में फिलहाल नहीं हैं। अब यह मान लेना चाहिए कि हिलेरी क्लिंटन ही हैं, जिनका भाग्य लगातार चमक रहा है।

© The New York Times

इराक में आईएस के अंत के लिए अलग तरह का युद्ध

आईएस की 'पहचान' मिटा सकता है मोसुल वॉर

कुर्द सेना के पास आधुनिक हथियारों से लेकर टैंक और बख्तरबंद गाड़ियां भी हैं। उत्तरी एवं पूर्वी तरफ से वे गांवों से होते हुए मोसुल में दाखिल हो रहे हैं।

इराक का मोसुल शहर ही इस्लामिक स्टेट (आईएस) की सबसे ज्यादा पकड़ वाला क्षेत्र है, जहां उसके सर्वाधिक आतंकी छिपे हैं। इराक के दूसरे बड़े शहर मोसुल पर पुनः कब्जा हासिल करने के लिए इराकी सेना, कुर्दिश सेना, गठबंधन सेना और अमेरिकी वायु सेना के सहयोग से बड़ा अभियान चलाया जा रहा है। यह एक अलग तरह का युद्ध है, जो आईएस के अंत के लिए वहां शुरू हो चुका है। इसमें बड़ी भूमिका कुर्द सेना के पेशमरगा लड़ाकों की है, जिन्होंने अपने क्षेत्र की रक्षा के लिए आईएस को चुनौती दी है। मोसुल शहर पर दो साल से आईएस आतंकियों का कब्जा है और उसे पुनः हासिल करने में सफलता मिलनी शुरू हो गई है। सवाल यह है कि आईएस के लिए क्षेत्र महत्वपूर्ण है या ख्याति। क्या उसे अपना अस्तित्व बचाने के लिए किसी सीमा की जरूरत है? जानिए विश्लेषकों के तर्क-

उसके लिए सीमाओं से महत्वपूर्ण है पहचान

• जेकब ऑलिडर्ट, वॉशिंगटन इन्स्टीट्यूट

मोसुल में शुरू हुआ यह अभियान किसी भी सेना की संगठित ताकत को दर्शाता है। इसी से आईएस की क्षमताओं का एक बार फिर परीक्षण हो जाएगा। पिछले एक साल से अधिक समय से इराक में उसकी मौजूदगी को नजरअंदाज किया जाता रहा है। उसने सीमाएं लांघनी शुरू कीं, तब यह अभियान चलाया गया गया। इस परीक्षण में मोसुल शहर रणनीतिक रूप से भी बिल्कुल उचित है। यही वह शहर है, जहां अबु बकर अल बगदादी ने खुद को शीर्ष पर घोषित किया। इसी शहर में आईएस ने अपनी मौजूदगी का प्रमाण दुनिया को दिखाया। मैं मानता हूं कि आईएस को इसी शहर से पहचान मिली और उसके लिए वहीं मायने रखती है। सीरिया में आईएस की राजधानी रक्का शहर है, वहां भी इमारतों के अंदर से आईएस अपनी गतिविधियां चलाता है। उसे मोसुल से खदेड़ दिया गया, तो उसके लिए गहरा आघात होगा और संगठित सेनाओं की बड़ी जीत।

सीमाएं सुरक्षित होंगी तो ही पहचान रहेगी

• मारा रेवकिन, येल लॉ स्कूल

आईएस ऐसा संगठन है, जो अल कायदा की ही राह पर है। उसने इराक से अल कायदा के खात्मे के बाद से ही सीमाओं पर कब्जा करने की नीति अपनाई। मोसुल पर कब्जा भी इसी का हिस्सा था, जो अब इराक में उसका आखिरी गढ़ है। वहां भी इराकी और कुर्द सेना को उसके खिलाफ सफलता मिल रही है। आईएस की पकड़ ढीली होनी शुरू हो चुकी है। सीरिया और लीबिया में भी यही हालात हैं। वहां भी उसके हाथ से सीमाएं छूटती जा रही हैं। मैं कह सकती हूं कि अगर कोई सीमा क्षेत्र होगा, तभी अस्तित्व बचा रहेगा, अन्यथा नहीं। हमारी परिभाषा में इसे जीवित बने रहने के लिए किसी क्षेत्र में पनाह लेना जरूरी कहा जाता है। उसके हाथ से सीमाएं छूटती हैं, तो शायद वह कमांड स्ट्रक्चर के स्तर पर बना रहे या केवल विचारधारा पर। पता नहीं, लेकिन यह कह सकती हूं कि बाद का परिदृश्य बिल्कुल अलग होगा।